What is sankalp

संकल्प और निश्चय दोनो एक दूसरे से तद्दन विपरीत है, निश्चय हम कोई वस्तु के लिए या उनसे विपरीत करते है, जैसे की हम कहे की मुजे यह करना है या नहीं करना है, या फिर हम कहे की अगले समयमें में अपना गोल पाने के लिए निश्चय करता हु, निश्चय अपनी इच्छा का दूसरा रूप है, जब हम अपनी इच्छा के लिए दढ्ढ हो जाते है तब हम निश्चय करते है, इच्छा सारी मन की होती है, निश्चय मन से किया जाता है जब कि संकल्प आत्मा से होता है, जब हम निश्चय करते है तब उसके लिए प्रयत्न होते है, जिसके प्रति निश्चय किया हो उनके बारे में विचार आते है और अपना निश्चय पूरा हो अपेक्षा करते है, इसलिए निश्चय के साथ क्रिया जुड़ी है, जब संकल्प होता है तो उनके लिए कोई प्रयत्न नहीं होते है, संकल्प उनके लिए लिया जाता है जो अपरिचित है, जो भी कुछ दिखाय देता है वो चाहे स्थुल हो या सूक्ष्म उनके पीछे जाना मन के पीछे जाना है, उसके प्रति निश्चय मन की इच्छा ही है, संकल्प अकर्म है जिसके बाद कोई अपेक्षा या यादगिरी नहीं होती, संकल्प होता है उसे लिया नहीं जाता,

Aasthit